९. मेरे पिता जी

– डॉ.हरिवंशराय बच्चन

(पूरक पठन)

पॉयनियर प्रेस में प्रताप की समय की पाबंदी, शुद्ध-स्वच्छ लिखावट, सही-साफ हिसाब-किताब रखने की आदत, विनम्र-निश्चल व्यवहार ने बहुत जल्दी उनको विशिष्टता दे दी। अपना काम खत्म कर वे सहयोगी क्लार्कों का पिछड़ा काम भी अपनी मेज पर रख लेते और दफ्तर बंद हो जाने के घंटों बाद, रात देर तक काम में जुटे रहते। इस प्रकार वे अधिकारियों और सहकर्मियों, दोनों के प्रिय बन गए। घर से दफ्तर चार मील होगा; कुछ कम भी हो सकता है। फासले के मामले में मेरा अनुमान हमेशा गलत होता है-ज्यादा की तरफ। वे पैदल ही आते-जाते शायद पैसे बचाने की गरज से, साइकिल न उन्होंने खरीदी, न उसकी सवारी की।

दफ्तर के लिए उन्होंने एक तरह की पोशाक अपनाई और जितने दिन दफ्तर में गए उसी में गए-काला जूता, ढीला पाजामा, अचकन जो उनके लंबे-इकहरे शरीर पर खूब फबती थी और दुपल्ली टोपी। जाड़ों में मेरी माँ के हाथ का बुना ऊनी गुलूबंद उनके गले में पड़ा रहता था। दफ्तर से बाहर के लिए वे धोती पर बंद गले का कोट पहनते थे, सिर पर फेल्ट कैप जो उन दिनों विलायत से आती थी और काफी महँगी होती थी। पिता जी बाहर निकलते तो छाता उनके हाथ में जरूर होता। मौसम साफ हो और रात हो तो वे छड़ी लेकर चलते थे, पर पतली नहीं अच्छी मोटी-मजबूत। लंबी लाठी मेरे घर में नहीं थी, पर लाठी चलाने की तालीम पिता जी ने कभी जरूर ली होगी। मुझे एक बार की याद है। शहर में किसी कारण हिंदू-मुस्लिम दंगा हो गया था।

पिता जी ने धोती ऊपर कर ली, कुरते की बाँहें चढ़ा लीं और अपना पहाड़ी मोटा डंडा दाहिने हाथ से कंधे पर सँभाले, बायाँ हाथ तेजी से हिलाते, नंगे पाँव आगे बढ़े। उन्होंने उनके पास जाकर कहा, ''मैं लड़ने नहीं आया हूँ। लड़ने को आता तो अपने साथ औरों को भी लाता। डंडा केवल आत्मरक्षा के लिए साथ है, कोई अकेला मुझे चुनौती देगा तो पीछे नहीं हटूँगा। मर्द की लड़ाई बराबर की लड़ाई है, चार ने मिलकर एक को पीट दिया तो क्या बहादुरी दिखाई। अकेले सिरफिरे की बात समझी जा सकती है; चार आदमी मिलें तो उन्हें कुछ समझदारी की बात करनी चाहिए। इस तरह की लड़ाई तो बे-समझी की लड़ाई है, कहीं किसी ने किसी को मारा, आपने दूसरी जगह किसी दूसरी को मार दिया। धरम का नाता है तो पास-पड़ोस इन्सानियत का नाता भी है। इन्सान मेल से रहने को बना है। लड़ाई कितने दिन चलेगी,

परिचय

जन्म : २७ नवंबर १९०७ प्रतापगढ़ (उ.प्र)
मृत्यु : १८ जनवरी २००३
परिचय : हरिवंशराय 'बच्चन' जी हिंदी कविता के उत्तर छायावाद काल के प्रमुख कवियों में से एक हैं। 'मधुशाला' उनकी अत्यंत प्रसिद्ध रचना है जिसने लोकप्रियता के नए कीर्तिमान स्थापित किए।
प्रमुख कृतियाँ : मधुशाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण, एकांत संगीत, आकुल अंतर, खादी के फूल, हलाहल, धार के इधर-उधर आदि (कविता संग्रह), क्या भूलूँ क्या याद करूँ, नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर, दशद्वार से सोपान तक (आत्मकथा के ४ खंड)

गद्‍य संबंधी

आत्मकथा: हिंदी साहित्य में गद्‍य की एक विधा है। आत्मकथा में व्यक्ति स्वयं अपने जीवन की कथा, स्मृतियों के आधार पर लिखता है। निष्पक्षता आत्मकथा का आवश्यक पक्ष है।

प्रस्तुत पाठ के माध्यम से 'बच्चन' जी ने अपने पिता के रहन-सहन, व्यक्तित्व, दृढ़ता, स्वाभिमान, कर्तव्यनिष्ठा आदि गुणों के साथ-साथ देश-काल परिस्थिति एवं स्वयं में आए संस्कारों एवं परिवर्तनों को प्रभावी ढंग से चित्रित किया है।

दो दिन, चार दिन; पाँचवें दिन फिर सुलह से रहना होगा । दोन-चार, दस-बारह, सौ-पचास हिंदू-मुसलमानों के कट-मरने से न हिंदुत्व समाप्त होगा न इस्लाम खत्म होगा । साथ रहना है तो खूबी इसी में है कि मेल से रहें । एक-दूसरे से टकराने की जरूरत नहीं; दुनिया बहुत बड़ी है ।'

पिता जी की बातों का असर हुआ । उस दंगे में फिर कोई वारदात नहीं हुई । आगे भी कई बार जब शहर में हिंदू-मुस्लिम दंगे हुए, हमारे मुहल्ले में शांति बनी रही ।

मेरे पिता का दैनिक जीवन प्रायः एक ढर्रे पर चलने वाला, नियमबद्ध और नैमित्तिक था । वे सवेरे तीन बजे उठते, शौचादि से निवृत्त होते और ठीक साढ़े तीन बजे गंगा स्नान के लिए चले जाते । पैदल आते; गंगा जी घर से तीन-चार मील के फासले पर होंगी । वे ठीक साढ़े छह बजे नहाकर लौटते, साथ में एक सुराही गंगाजल भी लाते, और पूजा पर बैठ जाते । पूजा के लिए जीने के नीचे एक छोटी-सी कोठरी थी; बगल की दीवार में एक अलमारी थी; उसपर एक बस्ते में बँधी दो पुस्तकें रखी रहतीं, एक रामचरित मानस और दूसरी गीता । पूजा की कोठरी में कोई मूर्ति न थी, दीवार से राम, कृष्ण, शिव, गणेश, हनुमान, सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा की शीशे जड़ी छोटी-छोटी तस्वीरें लटकी थीं । पिता जी को बहुत झुककर उस कोठरी में जाना होता और अब वे उसमें बैठ जाते तो बस इतनी ही जगह बचती कि सामने रेहल रखकर उसपर पोथियाँ खोली जा सकें । वे मानस का नवाहिक पाठ करते थे, यानी प्रतिदिन इतना कि नौ दिन में पूरी रामायण समाप्त हो जाए । उनकी मानस की पोथी में, जो अब तक मेरे पास है, उन्हीं के हाथ के नवाहिक के निशान लगे हैं । पाठ वे सस्वर करते थे । उनकी आवाज सुरीली नहीं थी; गाते मैंने उनको कभी नहीं सुना, पर उनका स्वर साफ, सप्राण और लयपूर्ण था और कोठरी से निकली उनकी आवाज सारे घर में गूँजती थी । आवाज की पहली स्मृति मुझे उन्हीं के मानस पाठ के स्वर की है और जब तक मैं उनके साथ रहा प्रतिदिन उनके पास का स्वर मेरे कानों में गया । मैं कल्पना करता हूँ कि सौरी में जन्म के पहले दिन से ही मैंने उनका पाठ स्वर सुनना शुरू कर दिया होगा । सौरी, पूजा की कोठरी के सामने दालान के एक सिरे पर बनाई जाती थी । राधा बताया करती थीं कि जब मैं बच्चा था तब चाहे कितना ही रोता क्यों न होऊँ जैसे ही मेरा खटोला पूजा की कोठरी के सामने लाकर डाल दिया जाता था, मैं चुप हो जाता था । जैसे मैं भी पिता जी का मानस पाठ सुन रहा होऊँ । मेरी माता तथा परिवार के अन्य लोग इसमें मेरे पूर्व जन्म के धार्मिक संस्कार की कल्पना करते थे । अब मैं ऐसा समझता हूँ यह मेरे पिता जी के स्वर की लिफ्ट या लय थी जो मुझे शांत कर देती थी । इतना मैं जरूर मानता हूँ कि इन श्रवण संस्कारों ने उस समय अद्भुत रूप से मेरी सहायता की होगी जब मैं गीता को 'जनगीता' का रूप दे रहा था, अवधी भाषा में, मानस की शैली में । अज्ञात

२) निम्नलिखित **अपठित** गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

१) कारण लिखिए :-

क) विमान के प्रति लेखक का आकर्षित होना -

ख) लेखक का एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग को अपना अध्ययन क्षेत्र चुनना -

पहली बार मैंने एम. आई. टी. में निकट से विमान देखा था, जहाँ विद्यार्थियों को विभिन्न सब- सिस्टम दिखाने के लिए दो विमान रखे थे । उनके प्रति मेरे मन में विशेष आकर्षण था । वे मुझे बार - बार अपनी ओर खींचते थे । मुझे वे सीमाओं से परे मनुष्य की सोचने की शक्ति की जानकारी देते थे तथा मेरे सपनों को पंख लगाते थे । मैंने एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग को अपना अध्ययन क्षेत्र चुना क्योंकि उड़ान भरने के प्रति मैं आकर्षित था । वर्षों से उड़ने की अभिलाषा मेरे मन में पलती रही । मेरा सबसे प्यारा सपना यही था कि सुदूर आकाश में ऊँची और ऊँची उड़ान भरती मशीन को हैंडल किया जाए ।

२) स्वमत -

३) 'मेरी अभिलाषा' विषय पर लगभग छह से आठ पंक्तियों में लिखिए ।

रूप से मेरे अवचेतन और ज्ञात रूप से मेरे चेतन की शिरा-शिरा मानस की ध्वनियों से भीगी हुई थी ।

* पिता जी मौन रहकर गीता पढ़ते थे, शायद चिंतन करने की दृष्टि से; मानस में वे बहा करते थे । संस्कृत का उन्हें साधारण ज्ञान था । मानस में आए संस्कृत अंशों को वे शुद्धता और सुस्पष्टता से पढ़ते थे पर संस्कृत से वह उच्चारण सुख अनुभव न करते थे जो अवधी से । कविता सस्वर पढ़ने का मुझे भी शौक है । ब्रज और अवधी की कविता मैं घंटों पढ़ सकता हूँ। मानस का तो सस्वर अखंड पाठ मैंने कई बार किया है, पर मानस की बात ही और है-खड़ी बोली की कविता मैं घंटे भर भी पढ़ूँ तो मेरी जीभ ऐंठने लगती है, उर्दू के साथ यह बात नहीं है । खड़ी बोली कविता ने, कहते हुए खेद होता है, मानस की सूक्ष्म शिराओं को अभी कम ही छुआ है । वह जीवन से उठी हुई कम लगती है, कोष से उतरी हुई अधिक । कारणों पर यहाँ न जाऊँगा ।

पूजा से पिता जी ठीक साढ़े आठ बजे उठते । उस समय तक मेरी माता जी भोजन तैयार कर देतीं । वे रसोई में बैठकर भोजन करते और कपड़े पहन नौ बजते-बजते दफ्तर के लिए रवाना हो जाते । किसी-किसी दिन ऐसा भी होता कि किसी कारण भोजन समय पर तैयार न होता । पिता जी को बहुत गुस्सा आता, माँ काँपने लगतीं, पर गुस्सा निकालने का समय भी उनके पास न होता । वे जल्दी-जल्दी कपड़े पहनते और बगैर खाए दफ्तर के लिए चल पड़ते । अपनी पैंतीस वर्ष की नौकरी में, वे कहा करते थे एक दिन वे दफ्तर देर से नहीं पहुँचे । मेरी माता जी जल्दी-जल्दी पूरियाँ बनातीं और एक डिब्बे में खाना रखकर मुहल्ले के किसी आदमी से दफ्तर भिजवातीं और जब तक आदमी मेरे पिता जी को खाना खिलाकर वापस न आ जाता वे भोजन न करतीं । जब कोई जाने वाला न मिलता तो उनका भी दिन भर का उपवास होता । घर की तीन बूढ़ियाँ-राधा, मेरी दादी और महारानी की बातें सुनने को ऊपर से मिलतीं । मेरी माँ न खातीं तो वे कैसे खातीं, पर अपनी भूख का गुस्सा वे दिन भर माँ पर उतारती रहतीं ।

पिता जी के दफ्तर से लौटने का कोई ठीक समय नहीं था । नौकरी के प्रारंभिक वर्षों में वे प्रायः देर से लौटते थे, आठ-नौ बजे, इससे भी अधिक देरी से, और खाना खाकर सो जाते थे । बाद को जब कुछ जल्दी आने लगे तो खाना खाने से पहले कुछ देर पढ़ते कभी खाना खाने के बाद भी, और कभी तो घूमने निकल जाते । सुबह गंगा स्नान में आने-जाने के आठ मील, दिन को दफ्तर आने-जाने के आठ मील, यानी कुल सोलह मील चल लेने पर भी उनकी चलास तृप्त नहीं

सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

१) संजाल :-

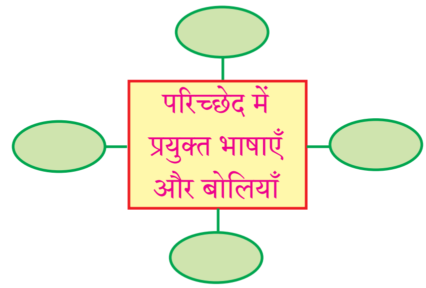

२) 'अपना व्यक्तित्व समृद्ध करने के लिए अलग-अलग भाषाओं का ज्ञान उपयुक्त होता है,' इसपर अपने विचार लिखिए ।

http://www.hindisamay.com/contentDetail.aspx?id=1069&pageno=1

होती थी और रात को भी दो-तीन मील घूम-फिर आने को वे तैयार रहते थे । तभी तो मैं कहता हूँ कि उन्हें चलने का मर्ज था । सबसे अचरज की बात यह थी कि रात को चाहे जितनी देर से सोएँ, उठते वे सुबह तीन ही बजे थे । उनका कहना था कि नींद लंबाई नहीं गहराई माँगती है । यानी कम घंटों की भी गहरी नींद ज्यादा घंटों की हल्दी नींद का काम कर देती है । उनके इस फारमूले के प्रति विश्वास ने मुझसे अपनी नींद पर कितना अत्याचार कराया है ! इसे सोचकर कभी-कभी मैं कहता हूँ कि जब मैं मरूँ तो मुझे सात-आठ दिन तक यों ही पड़े रहने देना-इस असंभव की कल्पना भर सुखद है-क्योंकि मुझे अपने जीवन की बहुत-सी रातों की नींद पूरी करनी है ।

समय की पाबंदी की जो उत्कटता उन्होंने अपनाई थी, उनके निबाहने के लिए घर के लोगों का सहयोग आवश्यक था । उन्हें सेंस ऑफ टाइम-वक्त का अंदाज-देने के लिए पिता जी ने अपनी नौकरी के पहले वर्ष में एक आराम घड़ी खरीदी और लाकर दालान की तिकोनिया पर रख दी । यह घड़ी नई नहीं थी, विक्टोरियन युग की थी, और पॉयनियर के दफ्तर में बहुत दिनों से काम दे रही थी । वहाँ वह 'कंडम' माल की तरह निकाल दी गई तो पिता जी ने शायद दो रुपए में ले ली । यह घड़ी बेहया साबित हुई । थोड़ी-बहुत सफाई के बाद वह चलने लगी-चलने लगी तो चलती ही चली गई । सातवें दिन उसमें चाभी देनी पड़ती, वह एलार्म भी बजाती । उसके कभी घड़ीसाज के यहाँ जाने की मुझे याद नहीं । तिकोनिया और खाली, इसकी कोई तस्वीर मेरे दिमाग में नहीं । मेरे पिता के जीवनपर्यंत वह चलती रही । उनकी मृत्यु को लगभग तीस वर्ष होने आए हैं, अब भी वह चल रही है । मेरे पास नहीं है । मेरी बड़ी बहन के लड़के रामचंद्र (फुटबॉल के अखिल भारतीय प्रसिद्धि के खिलाड़ी) उसे अपने नाना की एक निशानी के रूप में ले गए थे । मैं जब कभी राम के घर जाता हूँ । हिर-फिरकर मेरी आँख उस घड़ी पर जा टिकती है । हमारे घर में कितने जन्म-मरण, शादी-ब्याह, भोजमहोत्सव उसने देखे हैं; कितने हर्ष-विषाद, अश्रु-हास, वाद-विवाद, कितने क्रोध-कलह, रोदन-गायन, श्रम-संघर्ष की वह साक्षी रही है ! मेरी माँ अक्सर कहती थीं कि ''नाम तो एकर आराम घड़ी है, पर न ई खुद आराम करत है न केहू क आराम करै देत है !'' आराम घड़ी नाम ऐसी घड़ियों को शायद इसलिए दिया गया होगा कि ये एक जगह रख दी जाती हैं, 'अलार्म' से 'आराम' आया हो तो भी कोई अचरज की बात नहीं । कभी-कभी 'आराम' का 'आ' भी छोड़ दिया गया है और ऐसी घड़ियों को मैंने लोगों को राम घड़ी भी कहते सुना है ।

—०— ('क्या भूलूँ, क्या याद करूँ' से)

शब्द संसार

नैमित्तिक (वि.) = निमित्यसंबंधी
विलायत (पुं.सं.) = विदेश
वाकचातुर्य (भा.सं.) = वाकपटुता, बोलने में चतुराई
अचेतन (वि.) = चेतनारहित
चलास (पुं भा.सं.) = चलने का शौक

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : –

(क) निम्नलिखित शब्दों को पढ़कर उनके लिए पाठ में प्रयुक्त विशेषताएँ लिखिए :

१. जूता ....

२. पाजामा ....

३. अचकन ....

४. टोपी ....

(ख) 'संयुक्त परिवार' संबंधी अपने विचार लगभग छह से आठ पंक्तियों में लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) विरामचिह्न पढ़ो, समझो :–

विरामचिह्न

स्थान सूचक ...

यह चिह्न सूचियों में खाली स्थान भरने के काम आता है।
जैसे (१) लेख– कविता... (२) बाबू मैथिलीशरण गुप्त ...

अपूर्ण सूचक
XXX

किसी लेख में से जब कोई अंश छोड़ दिया जाता है; तब इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है ।
जैसे – तुम समझते हो कि यह बालक है ।
XXX
गाँव के बाजार में वह सब्जी बेचा करता था ।

विरामचिह्न

किसी संज्ञा को संक्षेप में लिखने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है ।
जैसे – डॉ. (डाक्टर)
कृ.पी.दे. – कृपया पीछे देखिए ।

संकेत सूचक
.

बहुधा लेख, कहानी आदि पुस्तक की समाप्ति पर इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है । जैसे – इस तरह राजा और रानी सुख से रहने लगे ।
–0–

समाप्ति सूचक –0–

रचना बोध

....

....

....